श्रीलाल शुक्ल के उपन्यासों में सांस्कृतिक जीवन–दर्शन

गीता रानी,
शोधार्थी, पीएच.डी (हिन्दी)
ओपीजेएस विश्वविद्यालय, राजस्थान

सांस्कृतिक जीवन–दर्शन :
संस्कृति का अर्थ, परिभाषा एवं स्वरूप :

संस्कृति का सामान्य अर्थ है मनुष्य के रहन–सहन, खान–पान, आचार–व्यवहार जिसमें मनुष्य का शारीरिक व आध्यात्मिक विकास होता है या हम कह सकते हैं कि व्यक्ति के जीवन की समस्त गतिविधियों का विकासात्मक संचालन जिस आंतरिक संयम, अनुशासन बाह्य व्यवस्था द्वारा होते हैं, उसे ही संस्कृति कहते हैं। इसके अन्तर्गत धर्म, ईश्वर, श्रद्धा, आस्तिकता, आस्था सभी भावनाओं का समावेश होता है।

संस्कृति शब्द की उत्पत्ति संस्कार शब्द से हुई है। संस्कार सम् उपसर्ग में 'कृ' धातु में 'धअ' प्रत्यय लगने से बनता है। जिसका मूल अर्थ है–सुधारना या बहिष्कार करना।[1]

संस्कृति का अर्थ विभिन्न शब्दकोशों में इस प्रकार दिया गया है।

पौराणिक सन्दर्भ कोश में संस्कृति शब्द का अर्थ पूरा करना, शुद्धि, परिष्कार, आचरणगत परम्परा, सभ्यता का वह रूप जो आध्यात्मिक एवं मानसिक वैशिष्ट्य का द्योतक होता है आदि अर्थों में लिया गया है।[2]

संस्कृति मानव जाति को सुसंस्कृत, सभ्य एवं राष्ट्र को एक सूत्र में पिरोने का महत्त्वपूर्ण कार्य करती है। संस्कृति ही मानव को अन्य प्राणियों से अलग करती है और मानव को सृष्टि का सर्वश्रेष्ठ प्राणी सिद्ध करती है। मोक्ष, निर्वाण एवं भक्ति संस्कृति के ही रूप है। भारतीय संस्कृति में पितृ–मातृ भाव और सभ्य आचरण को महत्त्वपूर्ण माना जाता है। भारतीय संस्कृति में समन्वय एवं सामंजस्य की प्रबल भावना है। भारतीय संस्कृति में धार्मिक रीति–रिवाज, देवी देवताओं की पूजा आदि को बहुत महत्त्व दिया गया है। भारतीय संस्कृति में अनेक मान्यताएँ हैं जो भारतीय संस्कृति को अन्य संस्कृतियों से अलग करती है तथा श्रेष्ठ साबित करती है।

इसी संस्कृति का भाग्यवाद, पाप–पुण्य, निष्काम कर्म एवं संस्कार साहित्य में चित्रित हुए हैं।

विदेशी संस्कृति का अवमूल्यांकन :

विदेशी संस्कृति का प्रभाव भारतीय संस्कृति पर बहुत अधिक पड़ा है। विदेशी, रहन–सहन, खान–पान, शिक्षा–दीक्षा तथा विदेशी तौर–तरीकों ने भी भारतीय संस्कृति को बहुत अधिक प्रभावित किया है। आज विदेशी संस्कृति भारतीय संस्कृति के ऊपर पूरी तरह से छाई हुई है। भारत समाज का मस्तिष्क विदेशी दासता से बुरी तरह जकड़ा हुआ है। पश्चिमी संस्कृति का खान–पान, रहन–सहन और भाषा हमारे ऊपर इस कदर हावी हो चुका है कि वे अपनी वेश–भूषा, खान–पान और संस्कृति को हीन दृष्टि से देखने लगे है। धारा प्रवाह अंग्रेजी बोलने वालों का समाज में रौब तथा रुतबा माना जाता है। अपने बच्चों को ऊँचे कान्वेंट स्कूलों में पढ़ाना गर्व की बात समझते हैं।

आधुनिक भारतीय समाज विदेशी संस्कृति के प्रभाव से बुरी तरह जकड़ा हुआ है। आज आधुनिकता के नाम पर नग्नता का प्रचार हो रहा है। भारत की सांस्कृतिक विरासत पर यह हमला अनेक विदेशी चैनलों के माध्यम से हो रहा है। भारतीय संस्कृति के बारे में कहा जाता है कि विश्व में तमाम प्राचीन सभ्यताएँ समय की मार व विदेशी आक्रमणें के कारण इतिहास के पन्नों में सिमट कर रह गई है। हमारी संस्कृति में यह गुण विद्यमान है कि उसने अफगानों, मुगलों व अंग्रेजी शासकों के आक्रमणों का सिर्फ मुकाबला किया, वरन् इन विदेशी आक्रान्ताओं को अपने में समाहित कर लिया। लेकिन आज प्रगतिशीलता व आधुनिकता के नाम पर जिस तरह से सांस्कृतिक आक्रमण भारतीय सभ्यता पर हो रहे हैं, उससे बचना मुश्किल है। भारतीय समाज में विदेशी वस्तुओं के प्रति आकर्षण अत्याधिक मात्रा में बढ़ गया है। खान–पान,

रहन–सहन कपड़े में भी विदेशीपन की झलक हम चाहते हैं। भारतीय संस्कृति पूरी रह से विदेशी संस्कृति के प्रभाव में है। श्रीलाल शुक्ल जी के साहित्य में भी भारतीय संस्कृति को बड़ी तीव्रता से अपनाते जा रहे हैं। हम भारतीय संस्कृति को छोड़कर पाश्चात्य संस्कृति को शीघ्रता से अपनाते चले जाते हैं। चाहे वह बातचीत करने का ढंग हो या कपड़े पहनने या रहन–सहन का, सब पाश्चात्य होता चला जाता है। इस प्रकार विदेशी वस्तुओं के प्रति भारतीय लोगों की मानसिकता का पता चलता है। विदेशी संस्कृति तथा विदेशी की तारीफों के पुल बांधना तथा भारतीय वस्तुओं, संस्कृति को हेय की दृष्टि से देखना भारतीयों की सभ्यता बन गई है। भारतीय लोग विदेशों की गर्व के साथ अतिश्योक्तिपूर्ण प्रशंसा करते हैं तथा वहाँ के गुण गाते हैं, विदेशी भाषा तथा संस्कृति ने भारतीयों में मानसिकता दासता कूट–कूट कर भर दी है। श्रीलाल शुक्ल जी ने अपने साहित्य में पाश्चात्य संस्कृति का विस्तृत वर्णन किया है। जिसको अपनाकर हम, उनमें लिप्त होकर अपना वर्तमान व भविष्य खराब कर रहे हैं। पाश्चात्य संस्कृति की प्रशंसा करके हम स्वयं को बड़ा महसूस करते हैं जो तर्क संगत नहीं है। सरदार जी ने कहा–न जाने उसने कहाँ रख दिया था। यह लीजिए, अपनी चीज।

उसके हाथ में किसी विदेशी सिगरेट के दो पैकेट थे। बेला, 'आपके लिए कई दिन से बचा रखा था। राजनाथ ने पैकेटों की ओर देखा और दो–एक बार तेजी से पलकें झपकी फिर उन्हें तेजी से जेब में डालकर कहा, शुक्रिया!'[3]

हमारे देश को आजादी प्राप्त किये काफी समय बीत चुका है। इस स्वतंत्रता प्राप्ति ने हमें जीवन के हर क्षेत्र में उन्नति प्रदान की है। परन्तु आज समय ऐसा आ गया है कि हम अपनी सभ्यता व संस्कृति का त्याग करके विदेशी सभ्यता के पीछे भाग रहे हैं। जीवन का हर क्षेत्र पाश्चात्य सभ्यता से प्रभावित है। विमल जब सरदार से मिलने जाता है कि आप को यहाँ पर आये काफी समय हो गया। आपका सिगरेट का पैकेट काफी समय से मंगवा रखा है। सरदार जी वह सिगरेट का पैकेट उसको देता है। विमल विदेशी सिगरेट का पैकेट लेकर जेब में डालकर चल पड़ता है। विमल विदेशी सिगरेट पीने का आदि है। तब कर्नल भारद्वाज इस फिल्मी दृश्य में एण्टी क्लाइमैक्स पैदा करते हैं। इसके बजाए कि वे संगीत प्रतिभा का बखान करते हुए उसे ड्राइंग रूम के एक कोने में प्यानों की ओर झुक जाने का इशारा करते, ऐसी फिल्मी प्यानों की ओर भारद्वाज जो दरअसल वहाँ मौजूद नहीं हैं, वे कहते हैं।[4]

भारतीयों में पाश्चात्य सभ्यता व संस्कृति का इतना अन्धानुकरण हो गया है कि उसको हम अपनी सभ्यता से ज्यादा महत्त्व देने लगे हैं। शादी–ब्याह जैसे कार्यक्रमों में भी हम हिंदी फिल्मी गानों की अपेक्षा अंग्रेजी फिल्मी गाने सुनना ज्यादा पसंद करते हैं। उनको भले उनका अर्थ नहीं पता हो। इसी प्रकार रागदरबारी में शिवपालगंज जैसे पिछड़े कस्बे के कर्नल भारद्वाज भी विदेशी पियानों को खरीदकर अपने घर में ले आए हैं। उसको बजाना सीखने की कोशिश करते हैं। हम भारतीयों के जीवन में अंग्रेजी सभ्यता के लक्षण अवश्य देखे जा सकते हैं। बाबू रामाधीन का एक जमाने तक गाँव का बड़ा–बड़ा दौर रहा। वातावरण बड़ा काव्यमय था। उन्होंने गाँव में पहली बार कैना, नैस्टर्शियम, लार्क्स्कर आदि अंग्रेजी फूल लगाये थे।[5]

अपने घरों को सजाने संवारने के लिए मानव तरह–तरह के डिजाइन बनवाता है। घरों को सजाने की प्रथा आज से नहीं बल्कि प्राचीन कल से ही विद्यमान है। अमीर लोग महंगी–महंगी चीजें खरीदकर घर की शोभा बढ़ाते हैं वहीं पर गरीब लोग तरह–तरह के पदार्थों से अपने मिट्टी के घरों को पोतते है। उन पर तरह–तरह के फूल, पशु, पक्षी, जानवर बनाते हैं। वहीं पर आधुनिक समय में मानव बहुत ही आगे निकल गया है। वह अपने घरों में विदेशी फूलों के पौधे अपने घरों में उगाता है। वे विदेशी पौधे मंगवाकर उगाते हैं।

देशी विश्वविद्यालयों के लड़के अंग्रेजी फिल्म देखने लगते हैं। अंग्रेजी बातचीत समझ में नहीं आती, फिर भी बेचारे मुस्कुराकर दिखाते रहते हैं कि वे सब समझ रहे हैं और फिल्म बड़ा मजेदार है। नासमझी के दौर में रंगनाथ भी उसी प्रकार मुस्कुराता रहा।[6]

हिन्दी हमारी राष्ट्र भाषा है। हम फिर भी हिंदी का मोह त्यागकर अंग्रेजी भाषा की तरफ आकर्षित हो रहे हैं। हमारा मत है कि हिन्दी के माध्यम से हम उन्नति नहीं कर सकते। इस भ्रम को पालकर हम विदेशी भाषाओं को सीखने का प्रयास करते हैं। राग–दरबारी उपन्यास में रंगनाथ अपने मित्रों

के साथ मिलकर अंग्रेजी फिल्म देखने जाता है। परन्तु उनको नहीं पता कि वह क्या कह रहा है परन्तु फिर भी उनकी बातों को सुनकर खूब हंसते हैं जैसे वे उनकी भाषा समझ रहे हैं। उन्हें पता है कि वे क्या बोल रहे हैं।

भारतीय संस्कृति के प्रशंसक :

समाज व संस्कृति एक–दूसरे के पूरक अंग है। समाज संस्कृति को प्रभावित करता है और संस्कृति समाज को प्रभावित करती है। आज के सांस्कृतिक परिवेश की उपेक्षा की जा रही है, तो दूसरी तरफ संस्कृति के नये मानदण्ड भी स्थापित नहीं हो पा रहे हैं। परिणाम यह हो रहा है कि नई व पुरानी सांस्कृतिक मान्यताओं में संघर्ष हो रहा है। इस कारण स्थिति बहुत विषम व विसंगतिपूर्ण बन गई है।

एक समय था जब पूरे विश्व में भारतीय सभ्यता व सांस्कृति का बोलबाला था। भारत को सोने की चिड़िया कहा जाता था। अतीत का यह गौरव आज अंधकार के गर्त में गिर गया है। आज के भारतीय सांस्कृतिक परिवेश पर निराला के विचार अवलोकनीय है। 'आज हिन्दू जाति के जीवन में जिस तरह की गन्दगी भर गई हैं उसको देखते हुए सुधारकों का यह कहना अनेक स्थलों पर सत्य है कि समाज की प्राचीन जातियों में से होकर गंदगी नहीं बह सकती। सदियों का कूड़ा उनमें भर गया है और उस समय की नालियां अब किसी काम की नहीं रह गई है। वर्तमान सभ्य संसार का सामाजिक प्रवाह जैसा है हमें भी उसी तरह की नई–नई नालियाँ काटकर तैयार करनी चाहिए नहीं तो हम ऊपर देशों का मुकाबला नहीं कर पाएंगे।[7]

इस प्रकार दोनों पीढ़ियों में मतभेद है। एक पीढ़ी प्राचीन संस्कृति से जुड़ी रहना चाहती है तो दूसरी पीढ़ी परिवर्तन लाकर नई संस्कृति को अपनाना चाहती है, परन्तु विडम्बना यह है कि नई संस्कृति की कोई निश्चित रूपरेखा नहीं बन पाई है। भारतीय संस्कृति की अपनी अलग झलक होती है, उसमें आत्मीयता, सादापन होता है।

तब कर्नल भारद्वज इस फिल्मी दृश्य में एण्टी क्लाइमैक्स पैदा करते हैं। इसके बजाय कि वे उसकी संगीत प्रतिभा का बखान करते हुए उसे ड्राइंग रूम के एक कोने में प्यानों की ओर जाने का इशारा करते, ऐसे फिल्मी प्यानो की ओर जो दरअसल वहाँ मौजूद नहीं है, वे कहते हैं।

'कर्नल भारद्वाज' बेटी उधर किचन में देख लो। अंकिल डिनर यहीं ले रहे हैं। इसके बाद क्या होगा? टी.वी. पर विज्ञापनों के लिए एक ब्रेक।[8]

वह कहने जा रहा है और हरचंदपुर को भी उसने वक्त से अपने पास रोक लिया। रोकते ही सुकन्या की ओर देखता है, उसकी कमनीयता आज उसे नये सिरे से विचलित करती है। वह उसके सामने है : लम्बी छरहरी, भूरे रंग के सफेद सादे सलवार–कुर्ते में जाड़े के बावजूद ऊनी कार्डिगन नहीं, सिर्फ उस पर सफेद डॉक्टरी कोट। साधारण लिबास में असाधारण कशिश, शंकर गहरी चुभन महसूस करता है–मेरे सामने खुशियों का विशाल सौध खड़ा है और मैं भीतर नहीं जा सकता। यह मेरे सामने है कसते मसर्रत लेकिन....।[9]

लड़की–अगर हम लोग कुछ देर झूले पर बैठना चाहें तो?

सुकन्या – मैं भी यही सोच रही थी।

चुस्त लड़का–पागल मत बनो। इस इलाके में पत्रकारों का रुतबा है। वे तुम पर तुरंत छाप देंगे कि जब रोम जल रहा है, तो हमारे शहरी नीरो बांसुरी बजा रहे हैं।

शंकरलाल–बांसुरी नहीं, वायलिन।

चुस्त लड़का–दोनों एक ही चीज हैं।

सुकन्या – वंडरफुल।[10]

वे दोनों होटल के सामने फैले हुए लम्बे–चौड़े लॉन में आ गए। वहाँ हल्की रोशनी फैली हुई थी और कुछ दूर–दूर पड़ी मेजों पर दो–दो, चार–चार लोग बैठे थे। शाम ठण्डी हो चली थी और यहाँ लॉन पर और भी ज्यादा ठण्डक थी। होटल के लाऊन्स में रिकार्ड पर कोई नाच की धुन बज रही थी,

जिसका असर पूरे लॉन में आखिरी बसंत के फूलों की भीनी खुशबू की तरह फैल रहा था। दोनों आराम से कुर्सियों पर बैठे थे। एक वेटर ने नजदीक आकर पूछा, 'क्या लोगे? बियर या व्हीस्की?'[11]

बराबर प्रेम–विवाह यहाँ इसीलिए अपवाद है। पत्र में आंकड़े देकर बताया गया था कि पिछले सालों में छात्राओं के उन प्रेम–विवाहों की संख्या, जो अध्यापक के साथ हुए थे, छात्रों के साथ होने वाले प्रेम–विवाहों से कहीं ज्यादा थी।[12]

मुकर्जी दीवार से सटी हुई अलमारियों की किताबें देख रहा था। कमरे के धुंधलके में किताबों के ताजे व रंगीन आवरण दीख रहे थे। जहाँ पर मुकर्जी खड़ा था, वहीं दीवार पर एक ट्यूब–लाइट जली। पहली झलक में उसने किताबों के शीर्षक पढ़े, वार एण्ड पीस, अन्ना करेनिना, मैडम बावरी, रिबेका, गुड अर्थ, कार्पेट बैगर्स।[13]

अशोक स्थानीय संगीत कॉलेज में सितार सिखाता था। कुछ साल पहले वह मुम्बई में था। वहाँ उसने दो–चार फिल्मों में संगीत के असिस्टैण्ट डायरैक्टर का भी काम किया था। सभी जानते थे कि मुम्बई में उसका और अजीत सिंह का साथ था। बाद में, किस्मत अच्छी न होने या किसी और वजह से, वह लखनऊ चला गया और उसने सितार सीखने की नौकरी कर ली। वह सितार बहुत अच्छा बजाता था। उसे किसी भी जलसे में और किसी भी शराबखाने में किसी भी समय पाया जा सकता था।[14]

भारतीय संस्कृति विश्व की महान संस्कृतियों में से एक है। भारतीय संस्कृति अनेक गुणों से युक्त है। संगीत भी भारतीय संस्कृति का एक विशिष्ट गुण है। यह एक ऐसा गुण है जिसको सुनकर व्यक्ति बड़े से बड़े दुःख को भूल कर सुख की अनुभूति करने लगता है। अशोक व अजीत सिंह दोनों अच्छे संगीतकार हैं। इनका संगीत बहुत ही सभ्य एवं अच्छा है। हरिश्चन्द्र जहाँ पर भी घूमने जाता है। वहाँ पर इन दोनों को अवश्य पाया जा सकता है। होटलों में खाना खाने वाले कम उनका संगीत सुनने वाला ज्यादा जाना पसंद करते हैं।

इमारत के पास लगभग एक एकड़ का पीले फूलों का विस्तृत लॉन था। उसी में दोनों सिरों पर टेनिस कोर्ट बनाए गये थे। इस दुमंजिला इमारत के सामने के हिस्से की दीवारों पर कई तरह की लताएँ चढ़ायीं गयी थीं। पोर्टिका का बहुत सा हिस्सा बेगनबेलिया के सुर्ख फूलों से ढका हुआ था। कम्पाउंड में आते ही भारतीय महाराजाओं के बीते हुए वैभव की याद आने लगती थी।[15]

भारत की प्राचीनकाल अत्यंत वैभवशाली रहा है। यहाँ पर असंख्य राजा–महाराजाओं का शासन रहा है। परन्तु यहाँ की भवन–निर्माण कला अद्वितीय है। ये नमूने आज भी हर जगह देखे जा सकते हैं। भारत में असंख्य जगह ऐसी है जहाँ पर हम इनकी भवन–निर्माण कला के नमूने देख सकते हैं। जहाँ पर सीआईडी का दफ्तर है। वहाँ पर भारतीयों के प्राचीन वैभव के नमूने देखे जा सकते हैं। इन से पता लगता है कि भारतीय संस्कृति कितनी विस्तृत एवं महान है।

सब–इंस्पैक्टर ने गंभीरता से कहा, 'हमें डायमण्ड होटल के बारे में ज्यादा पता नहीं है चचा, वह दूसरे थाने में पड़ता है। पर मेरा ख्याल है, उसका रिकार्ड काफी साफ सुथरा है।'

इंस्पैक्टर का रिटायरमैंट नजदीक था। उसके तजुर्बे की दाद देते हुए, उसके साथ वाले और मातहता चचा कहते थे। अपने से छोटों को बेटा कहने की उसे आदत पड़ गई थी। कभी–कभी वह कम उम्रवालों अपने से ऊँचे अफसरों को भी बेटा कह दिया करता था। बाद में माफी मांगता था। हँसी मजाक के बाद उसकी गिनती होशियार इंस्पैक्टरों में थी।[16]

भारतीय संस्कृति की एक अन्य विशेषता नैतिकता है। भारतीय समाज में नैतिकता हमें ऊँचा दर्जा प्रदान करती है। अजीत की मृत्यु का केस जिस पुलिस अधिकारी के पास गया है। वह काफी ईमानदार है। अपने काम के प्रति वफादारी से अपने कर्त्तव्य का निर्वाह करता है। वह अपने साथ काम करने वालों के प्रति अच्छा व्यवहार करता है। एक सीनियर अफसर होने के बाद भी वह कभी किसी पर रौब नहीं झाड़ता। उनको आदरसूचक शब्दों से सम्बोधित करता है। उनके साथ मिल–जुल कर काम करता है। उन पर आत्मीयता से संबंध बनाये हुए है। उसके साथियों को दुःख है कि यह अफसर सेवानिवृत्ति के

कगार पर है। इसके बाद पता नहीं कैसा अफसर आएगा। इनके अच्छे व्यवहार एवं सद्‌गुणों के कारण इसके साथी इसको जाने नहीं देना चाहते परन्तु उनको जाना तो पड़ेगा।

'नहीं भाभी, चाँद ने पाठ जैसा दोहराया, मैं जानती हूँ, साड़ी बहुत अच्छी पोशाक है। इसे पहनकर नारियाँ बड़ी ग्रेसफुल दिखती हैं। साड़ी बिल्कुल हमारी संस्कृति की तरह है, इसमें सब कुछ छिपा है और सब कुछ दिखता भी है। भारत के असर से अब विदेशों में भी साड़ी पहनी जानी लगी। अफरीकी औरतें फ्राक व्रॉक का चक्कर छोड़कर अब साड़ियाँ पहनने लगी हैं, साड़ियों का एक्सपोर्ट बढ़ रहा है।'[17]

चाँद अपनी भाभी नीला के साथ बाजार में कपड़े खरीदने के लिए जाती है। वहाँ पर अपनी भाभी के कहने पर वह साड़ी खरीद लेती है। भारतीय संस्कृति में पहनावे पर भी विशेष ध्यान दिया जाता है। नीला चाँद को साड़ी के माध्यम से अपनी संस्कृति की प्रशंसा करती है और कहती है कि साड़ी में औरत बहुत सुंदर लगती है। यह साड़ी अब भारत से विदेशों में बेची जाती है। विदेशी औरतें भी आज साड़ी जैसे पहनावे को पसंद करने लगी हैं। इसीलिए हमको भी अपनी संस्कृति के अनुकूल पहनावा पहनना चाहिए।

लगभग हाँफते हुए उस आदमी ने कहा, 'एक स्कूटर रोक दीजिए बुखार है।'

मुकर्जी ने उसके मत्थे पर हाथ रखा। फिर सड़क के किनारे खड़े तीन–चार मिनट प्रतीक्षा करता रहा। उस वक्त कोई भी खाली स्कूटर सामने से नहीं निकला। एक खाली टैक्सी आती हुई दीख पड़ी।

उसने उसे रोका।

उस आदमी ने कहा, 'टैक्सी नहीं, उसके पैसे मैं न दे पाऊँगा। स्कूटर..।'

टैक्सी रुक गई थी। मुकर्जी ने पूछा, 'तुम्हें जाना कहाँ है?'

'दूर नहीं चाँदनी चौक तक।'

मैं टैक्सी का भाड़ा दे दूंगा।'[18]

मुकर्जी भारतीय सभ्यता के मानवीय गुणों से ओत प्रोत है। एक अनजान व्यक्ति की सड़क पर सहायता ही नहीं करते बल्कि टैक्सी का किराया देकर उनको यथास्थान पर पहुँचा देते हैं। हमारी सभ्यता परोपकार की भावना से ओत–प्रोत है। दूसरे के दुःख को अपना समझ कर उसका समाधान किया जाता है। ऐसा मुकर्जी ने भी किया है। वे सम्पूर्ण उपन्यास में दीन–दुखियों की सहायता के लिए तत्पर है। औरों के दुःख को अपना समझकर उनकी मदद करते हैं।

बोले, 'तुमने मुझे नमस्ते किया था?'

मैंने नमस्ते किया था। पर मारे घबराहट के मेरे हाथ मेज की ऊँचाई से ऊपर न उठ सके थे, न जबान से ही स्पष्ट निकल पाया था। इस त्रुटि को ब्याज सहित सुधारने के लिए मैंने झुककर उनके पाँव छुए। उनके मुँह पर हल्की मुस्कुराहट दौड़ गई। बोले, 'हमारे स्कूल में भारतीय सभ्यता के आधार पर शिक्षा दी जाती है। अपने से बड़ों से मिलते समय सदैव सभ्यता का व्यवहार करना चाहिए। यदि तुम ऐसा न करोगे तो तुम्हारा इस विद्यालय में रहना कठिन होगा।'[19]

रामदास अपने मित्र के साथ जब स्कूल में अध्यापक से मिलने जाता है तो वहाँ पर वह घबरा जाता है। इसी घबराहट के कारण उसका हाथ मेज से ज्यादा ऊपर न उठ सका। इसीलिए वह अपनी इस गलती को सुधारने के लिए मास्टर जी के पाँव छूता है। मास्टर जी खुश हो गये और बोले कि हमारे स्कूल में भारतीय सभ्यता के अनुसार शिक्षा प्रदान की जाती है। हम अपनी सभ्यता की इज्जत करते हैं। सभी नियम हमारी सभ्यता व संस्कृति को ध्यान में रखकर बनाए गए है। इसीलिए तुमको उन सब नियमों का पालन करना पड़ेगा।

वे सोफे पर तिरछे होकर लेटे हुए थे। अखबार पढ़ रहे थे। दो–तीन व्यक्ति उनके पास बैठे थे। मुझे और राजधर को देखकर उन्होंने अखबार पढ़ना बंद कर दिया। मैंने उनका चरण–स्पर्श किया। इस क्रिया से वे सदैव प्रसन्न होते थे। पूर्ववत् मुस्कुराते हुए उन्होंने आशीर्वाद दिया और बोले, तो बी.ए. आपने फर्स्ट क्लास में पास कर लिया।'[20]

हमारी संस्कृति हमें सदा बड़ों का आदर करना सिखाती है। इस सत्कार को दर्शाने के लिए हम उनको झुककर प्रणाम करते हैं या फिर उनके चरण स्पर्श करते हैं। रामदास जब राजधर के साथ अध्यापक के घर पर गये तो वह अखबार पढ़ने में व्यस्त थे। उनको देखकर अखबार पढ़ना बंद कर दिया। रामदास ने उनके प्रति अपने संस्कारों व आदर मान को प्रदर्शित करने के लिए चरण–स्पर्श किए। यह हमारे संस्कारों का सर्वश्रेष्ठ गुण है।

तभी मुझे यह बात बराबर कुरेदती रही कि क्यों न मैं अपनी बुद्धि का प्रयोग उन लोगों के लिए करूँ जो व्यापक रूप से अनेक बीमारियों के शिकार होते हैं। जिनके बचाव के लिए हमारे पास न तो उपयुक्त निरोधक जानकारी है न ही साधन। तभी मैंने सोचा और खूब सोच–विचार कर तय किया कि मुझे क्लिनिकल काम छोड़कर अपने देश जैसे अर्धविकसित और ट्रॉपिकल क्षेत्रों के रोगों पर काम करना चाहिए। जिसके कारण हर साल न जाने कितने लोग खास तौर से बच्चे संक्रमण के शिकार होते हैं। फिर भी मलेरिया बार–बार सिर उठाता है और हर साल लाखों बच्चों व वयस्कों की मौत का कारण बनता है।[21]

मानवता से प्रेम करना ही सबसे बड़ा गुण है। शंकरलाल में मानवता के प्रति प्रेम है। वह अपने गाँव के लोगों के दुःख देखकर व्यथित हो जाता है। उसके मन में उनके प्रति अथाह प्रेम है। इसी प्रेम तथा मानवता के कारण वह गाँव में अस्पताल खोलने का इच्छुक है। वह चाहता है कि वह डॉक्टर बनकर गाँव में लोगों की सेवा करे। हमारे यहाँ पर लोग बहुत सी बीमारियों के शिकार हो जाते हैं। उनका इलाज करवाना तो दूर उनको ठीक करने वाला तक नहीं है। इसीलिए मैं एक ऐसा डॉक्टर बनकर जो सभी असाध्य रोगों का इलाज जानता है, वही बनूँ।[22]

इस औरत को ऐसी टिकिया देने वाला कोई न था, आज भी नहीं है। आगे भी कोई आएगा, इसकी उम्मीद नहीं है। हमारे इंस्टीट्यूट में एक मरीज की हार्ट सर्जरी पर कितना खर्च होता है वह रुपया–सिर्फ एक ऑपरेशन का रुपया–काश। मुझे मिल जाए। उसके सहारे मैं अपने गाँव के लिए नहीं, दो–चार गाँवों के लिए कम से कम डेढ़ साल की साधारण चिकित्सा का इंतजाम कर दूंगा। कहा न, सवाल प्राथमिकता का है।[23]

शंकरलाल का गाँव काफी पिछड़ा था। उसके गाँव में कोई ऐसा न था जो उनके गाँव के दीन दुखियों की सेवा कर सके। उनके कष्ट मिटा सके। जो डॉक्टर थे वे बाहर शहर में जाकर बस गए थे। हस्पताल नाममात्र का था। वक्त पर डॉक्टर भी न मिलते थे। शंकरलाल के गाँव में एक औरत को बहुत जोर का दर्द हुआ तो उनको अपने पिता की याद आई कि कभी मेरे पिता जी भी इस दर्द के कारण मर गए थे। आज इस औरत को भी अगर मैं दवा न दूँ तो यह भी मर जाएगी। वह उसे एक छोटी सी गोली देता है, जिसका खाते ही वह ठीक हो जाती है। बहू का सारा परिवार उसका धन्यवाद करता है। वह बहुत खुश होता है। शंकरलाल के डॉक्टर बनने का मुख्य लक्ष्य भी समाज का कल्याण करना था। वातावरण फूहड़ व अश्लील था। बरामदे में कुत्तों की तरह नागरिक लेटे हुए थे। होली नजदीक आ गई थी। इसीलिए लोगों की जुबान पर गालियाँ व मजाक था। देह पर गन्दे पर रंग–बिरंगे कपड़े या लत्ते थे। मैले–कुचैल, बढ़ी हुई दाढ़ी वाले वादी–प्रतिवादी, साक्षीगण, बीड़ी पीते हुए या गन्दे दांतों के पीछे तम्बाकू का चूरा सुरक्षित बनाये हुए चीख–चीख कर बातें कर रहे थे।'

हमारा देश त्यौहारों का देश है। यहाँ पर समय–समय पर त्यौहार आते रहते हैं। सभी त्यौहार हमारी सभ्यता व संस्कृति के भिन्न–भिन्न रंगों से मिलकर बुने हुए है। सभी में सौहार्द एवं प्रेम है। होली भी ऐसा ही पर्व है, जिसमें सभी वैर, द्वेष को भुलाकर सब एक–दूसरे को गुलाल लगाते हैं। सब अपनी दुश्मनी भुलाकर एक–दूसरे के गले मिलते हैं। सभी लोग होली के त्यौहार को नजदीक जानकर तनों पर पुराने व फटे–पुराने कपड़े पहन कर लेटे हुए हैं। सबकी जुबान पर गालियाँ व मजाक है। प्रेम से एक–दूसरे पर पानी डालते हैं।

संदर्भ सूची :

1. संस्कृति शब्दार्थ कौस्तुभ, सं. चतुर्वेदी द्वारिका प्रसाद शर्मा, पृ. 1148
2. पौराणिक संदर्भ कोश–डॉ. एन.पी. कुट्टन पिल्लै, पृ. 1175

3. श्रीलाल शुक्ल, सीमाएँ टूटती हैं, पृ. 116
4. श्रीलाल शुक्ल, रागविराग, पृ. 18
5. वही, पृ. 43
6. श्रीलाल शुक्ल, रागविराग, पृ. 71
7. उषा शर्मा, स्वातन्त्रयोत्तर, हिन्दी निबन्ध साहित्य में व्यंग्य, पृ. 79
8. श्रीलाल शुक्ल, रागविराग, पृ. 18
9. श्रीलाल शुक्ल, रागविराग, पृ. 50
10. वही, पृ. 63
11. वही, आदमी का जहर, पृ. 40
12. वही, सीमाएँ टूटती हैं, पृ. 85
13. श्रीलाल शुक्ल, सीमाएँ टूटती हैं, पृ. 91
14. वही, आदमी का जहर, पृ. 12
15. श्रीलाल शुक्ल, आदमी का जहर, पृ. 26
16. वही, पृ. 17
17. श्रीलाल शुक्ल, सीमाएँ टूटती हैं, पृ. 79
18. श्रीलाल शुक्ल, सीमाएँ टूटती हैं, पृ. 86
19. वही, सूनी घाटी का सूरज, पृ. 61
20. श्रीलाल शुक्ल, सूनी घाटी का सूरज, पृ. 99
21. श्रीलाल शुक्ल, रागविराग, पृ. 61
22. वही, पृ. 46
23. वही, पृ. 16